फसल अवशेष न जलाए, कंपोस्ट खाद बनाए किसानः डॉ. खलील

कानपुर। सीएसए द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, अनौगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं। क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। केंद्र के मुदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मुदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मुदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।जिसके कारण मुदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड नहीं पाते। जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त

नहीं कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ-साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेत् समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है। वायु प्रदुषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंध ान कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों मैं प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी। तथा मुदा के भौतिक एवं

रासायनिक संरचना में सधार होगा।जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है।फसल अवशेषों के प्रबंध ान करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढती है। इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मुदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं। जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। उन्होंने बताया कि इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर

प्रदेश में गेहं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है। कि वह गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंध ान हेत् आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरो से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबा दें।जिससे मुदा में जीवांश कार्बन की बढोतरी होगी। और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त गेहं एवं अन्य रबी फसल के फसल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में फसल अवशेष सड जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी। जिससे मृदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती

हिन्दुस्तान कानपुर • शुक्रवार • १४ मई २०२१ ति

घरों में ऐसे पौधे लगाइए जिनसे मिले ऑक्सीजन

कानपुर विरष्ट संवाददाता

कोरोना संक्रमण से बचने के लिए सिर्फ घर में रहना जरूरी नहीं है बल्कि शुद्ध वातावरण भी आवश्यक है। घरों में ऐसे पौधों को लगाएं, जो कार्बन डाई ऑक्साइड समेत कई अन्य गैसों को अवशोषित करने संग ऑक्सीजन को बाहर निकालें। सीएसए अभियान चला रहा है। विवि मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने बताया कि इन पौधों को लगाने से घर का माहौल शुद्ध रहता है व ऑक्सीजन का लेवल बढ़ा रहता है। इन पौधों को एयर फ्लटरिंग प्लांट भी कहते हैं।

ये पौधें लगाना होगा फायेदमंद: मनी प्लांट झ यह एक बेल है। यह कम रोशनी में भी जिंदा रहता है और खाली बोतल में लगाया जा सकता है। यह वायु में मौजूद कार्बन डाई ऑक्साइडको ग्रहण कर स्नेक प्लांट- इस पौधे को बहुत कम धूप की जरूरत होती है। इसके अलावा पानी की भी जरूरत ज्यादा नहीं होती। हवा को फिल्टर करता है। पाइन प्लांट- घर की हवा को शुद्ध बनाने के लिए देवदार का पौधा काफी मशहूर है। इसे बहुत ज्यादा देखभाल की जरूरत नहीं होती। पीस लिली- पीस लिली घरों हानिकारक गैसों को खत्म करता है। यह धूल को भी समाप्त करता है। घर की हवा को शुद्ध रखता है।

ऑक्सीजन बाहर निकालता है। इससे घर में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा कम और ऑक्सीजन अधिक होती है।

एलोवेराः यह औषधीय पौधा है। घर की हवा शुद्ध रखता है। इसकी पत्तियों से निकलने वाले रस का इस्तेमाल कई बीमारियों में किया जाता है।







आर.एन.आई.नं.- UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्ताप्रस्

की.ए.वी.पी नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विकायन मान्यता प्राप्त

366 : 210

कानपुर देशत,गुक्रवार १४ मई २०२१

Email: sattacspress@rediffmail.com

फसल अवशेष न जलाए,कंपोस्ट खाद बनाए किसान- डॉ खलील खान,मृदावैज्ञानिक

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृ षि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र,अनौगी के मुदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं। क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मुदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मुदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पडता है ।मुदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।जिसके कारण मुदा में उपरिधत जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते। जिससे पीधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ–साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है जिन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों

तथा घरों में भी आग लगने की

संभावना बनी रहती है। वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने में भी वृद्धि होगी। तथा मुदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा ।जिससे मूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती



की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों मैं प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या है।फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाम प्राप्त कर किसान लामान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं। जिससे कि किसान माई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। उन्होंने बताया कि इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहूं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है। कि वह गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेत् आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरों से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबा दें।जिससे मुदा में जीवांश कार्बन की बडोतरी होगी। और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त गेहूं एवं अन्य रबी फसल के फसल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में फसल अवशेष सङ जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी। जिससे मृदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है।

फसल अवशेष न जलाए, कंपोस्ट खाद बनाए किसानः डॉ. खलील

कानपुर। सीएसए द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, अनौगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं। क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। केंद्र के मुदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मुदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मुदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।जिसके कारण मुदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड नहीं पाते। जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त

नहीं कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ-साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेत् समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है। वायु प्रदुषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंध ान कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों मैं प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी। तथा मुदा के भौतिक एवं

रासायनिक संरचना में सधार होगा।जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है।फसल अवशेषों के प्रबंध ान करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढती है। इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मुदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं। जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। उन्होंने बताया कि इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर

प्रदेश में गेहं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है। कि वह गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंध ान हेत् आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरो से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबा दें।जिससे मुदा में जीवांश कार्बन की बढोतरी होगी। और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त गेहं एवं अन्य रबी फसल के फसल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में फसल अवशेष सड जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी। जिससे मृदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती

प्रमुत् अवशेष न जलाएं, कंपोस्ट खाद बनाएं किसान : डॉ. खलील कानपुर। सीएसए द्वारा संचालित पसलों तथा घरों में भी आग लगन की उर्वग शक्ति को नको नको नको

कृषि विज्ञान केंद्रए अनौगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फ्सलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फ्सल अवशेषों को खेत में न जलाएं। क्योंकि फ्सलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़ तना पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। केंद्र के मुदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फ्सल अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मुदा के भौतिकए रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड नहीं पाते। जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप अगली फ्सल के उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ.साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फ्सल अवशेषों में आग लगाने से अन्य

संभावना बनी रहती है। वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फ्सल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों में प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी। तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है।फ्सल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फ्सल अवशेष प्रबंधन से मुदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की

स्वच्छ बनाएं। जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। उन्होंने बताया कि इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फ्लस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहूं एवं धान के फ्सल अवशेषों को जलाने में कमी आई है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है। कि वह गेहूं एवं अन्य रबी की फ्सलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत पसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरो से जुताई करके पसल अवशेषों को खेत में दवा दें जिससे मृदा में जीवांश कार्वन की बढ़ोतरी होगी। और फ्सल अवशेष खाद का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त गेहूं एवं अन्य रबी फ्सल के फ्सल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में फसल अवशेष सड़ जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी। जिससे मृदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली पसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है।

14 may_jan express.pdf - Read-only





5 ORURIURI

लखनऊ, शुक्रवार, १४ मई, २०२१, वर्ष : १२, अंक : २१०, पृष्ठ : १२, मुल्य र ३.००/-

तेत्र की 'तीकरी तकर' ...

mares क्या केरकट्र से क्याबीवर काहीय किनी किन्स | www.junespresslive.com/epiper

कटाई के बाद फसल अवशेषों को खेत में ना जलाने की अपील

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के बाद फसल अवशेषों को खेत में ना जलाने की अपील किसानों से सीएसएयू के कृषि विज्ञान केंद्र अनीगी के मुदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने की है। उन्होंने बताया कि फसलों के अवशेषों को जलाने से उनके जड़, तना,पत्तियों आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं और मृदा के तापमान में वृद्धि भी हो जाती है जिसके कारण मिट्टी की भौतिक रासायनिक और जैविक दशा पर विपरीत प्रभाव पड़ने के साथ मृदा में



मौजूद सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं तथा मृदा में उपस्थित जीवांशो के अच्छी तरह ना सड़ पाने के कारण पौधों को पोषक तत्व प्राप्त नहीं हो पाते हैं जिससे अगली फसल के उत्पादन

में गिरावट आती है। डॉ. खान ने कहा कि खेत में उसे जलाने से उत्पन्न वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी घातक बीमारियां हो सकती हैं तथा फसलों

और घरों में आग लगने का डर बना रहता है मई के महीने में फसल अवशेषों का उचित प्रबंध कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों में प्रयोग करें इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ भूमि में लाभदायक जीवाणुओं की संख्या में भी वृद्धि होती है। उन्होंने किसानो से गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के बाद फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरो से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबाने की बात कही जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोत्तरी होगी और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र





वर्षः १२

अंक:137

देहरादून, गुरुवार , १३ मई , २०२१

पृष्टः०८





टेहराटून, गुरुवार १३ मई, २०२१

•

फसल अवशेष न जलाएं,कंपोस्ट खाद बनाए किसानः डॉ खलील खान

दीपक गीड़ (जनना ट्रो)

कन्नीज / करनपुरः वृधि विज्ञान केंद्र, अनौगी (कन्नीज) के मृदा वैज्ञानिक की खलील खान ने जनपद के समस्त किसान माइयाँ से अपील की है कि वे अपने खेलों में गेहूं एवं अन्य रबी फलालों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को क्षेत्र में न जलाएं क्योंकि फनालों के अवशेषों को जलाने में जनके जब, तना पतियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं केंद्र के मृदा वैज्ञानिक टॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फराल अवशेषों को जलाने से मुदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है जिसके कारण मुदा के भौतिक, राशायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पढ़ता है मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं जिसके कारण मुदा में उपस्थित जीवांश अन्तरी प्रकार से तक नहीं पाते जिससे पीधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर



पाते हैं परिणाम स्वरूप अगली फराल के जत्पादन में गिरावट आती है इसके अविरिक्त वातावरण के साध-साध पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है उन्होंने कहा कि फराल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फरालों तथा चरों में भी आग लगने की संश्ववना बनी खती है वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलजी जैसी वर्द प्रकार की घातक श्रीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी एहती हैं जन्होंने यह भी बलाया कि किसान माइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेठों में प्रयोग करें इससे खेठ की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी बृद्धि होगी तथा मृदा के मौतिक एवं रासायनिक संस्थाना में सुधार होगा जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संवार में बृद्धि होती है फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खमतवार कम होते है तथा जल वाष्य उत्सर्जन भी कम होता



है जिससे शिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएय मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रकंबन से मूदा वर पीएय मान सामान्य किया जा सकता है उन्होंने कहा कि फलल अवशेषों का उचित प्रकंबन करते हुए लाग प्राप्त कर किसान लागान्वित हो भूमि की उवंस शक्ति को बढ़ाते हुए यातावरण को स्वच्छ बनाएं जिससे कि किसान गाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें उन्होंने बताया कि इकोनामिक

टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरवार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहूं एवं भान के फराल अवशेषों को जलाने में कमी आई है मुदा वैज्ञानिक को खलील खान ने किसान माइयों से अपील की है कि वह नेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हावैंस्टर से कटाई के उपरांत कसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख क् मि यंत्र जैसे तवेदार हैते से जुताई करके फराल अवशेषों को खेत में दबा दें जिससे मुदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोतरी होगी और कसल अवशेष खाद का कार्य करेगी इसके अतिरिक्त गेडूं एवं अन्य रबी फसल के फराल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपीजर का प्रयोग करते हुए ह से 10 दिन में फसल अवशेष सढ़ जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी जिससे मुदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फराल गुणवचा युक्त प्राप्त होती है।

BUILT HOLLING

शुक्रवार । 14.05.2021

kanpuramarujala .com

05

पौधे लगाएं, भरपूर ऑक्सीजन पाएं

कानपुर। कोरोना संक्रमण से बचने के लिए चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने अभियान शुरू किया है। इस अभियान में लोगों से ऐसे पौधे लगाने की अपील कर रहे हैं कि जो हानिकारक गैसों को अवशोषित कर ऑक्सीजन छोड़ते हैं। विवि के मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने बताया कि देवदार, मनी प्लांट, पीस लिली, एलोविरा, स्नैक प्लांट लगाना लाभदायक है। (ब्यूरो) AAJ KA KANPUK.pat - Read-only







कानपुर, शुक्रवार 14 गई 2021

98-B

दैनिक

प्रकारित लाइनऊ, त्वाव, सेवचूर, लाईबचूर खीरी, इमीरपूर, मैहटा, बदा, फनेइफू, इध्यवत्य, इटाव, कनीय, वाबीचुर, बारपूर देशन, बहरहच में प्रमानित

फसल अवशेष न जलाए,कंपोस्ट खाद बनाए किसान- डॉ खलील खान

कन्नौज/कानपुर-कृषि विज्ञान केंद्र, अनौगी (कन्नौज) के मुदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मुदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है मृदा में उपस्थित सृक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है



इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ-साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर

की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाण की संख्या में भी वृद्धि होगी तथा मुदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें उन्होंने बताया

खेतों मैं प्रयोग करें इससे खेत

इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है मुदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है कि वह गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरो से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबा दें जिससे मुदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोतरी होगी और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी इसके अतिरिक्त गेहूं एवं अन्य रबी फसल के फसल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में फसल अवशेष सड़ जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी जिससे मृदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है

दिविक्स सरक्रि

फसल अवशेष न जलाएं, कंपोस्ट खाद बनाएं किसान : डॉ खलील

कानपुर। सीएसए द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, अनौगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं। क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते। जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं। परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ-साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है। वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों मैं प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी। तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा।जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है।फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है।





 \mathcal{Q}

K Z





R.N.I. NO UPHIN@ 2013/53179

कानपुर नगर कानपुर देखत उन्नाव हमीरपुर कन्नीज इटावा उरई जालीन लखनऊ आगरा मधुरा औरैया इलाहाबाद से एक साथ प्रसारित

वर्ष - 8 अंक - 201 कानपुर, शुक्रवार, 14 मई 2021 पृष्ठ - 4 मृल्य 1:00

सोशल रिपोर्टर



हिन्दी दैनिक

फसल अवशेष न जलाए,कंपोस्ट खाद बनाए किसान- डॉ खलील खान

कानपुर, चंद्रशेखर आजाद क्षि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा

सोशल रिपोर्टर हिन्दी दैनिक

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक,सत्यप्रकाश द्वारा जय वजरंग प्रिंटर्स 402 ब्लॉक पनकी, कानपुर से मुद्रित एवं सचेण्डी कानपुर नगर से प्रकाशित।

सम्यादक **मनोज मिश्रा** थो. 97 94 35 32 27 9794016473

भूग १४० १० व १३ चह संपादक-लक्ष्मीकांत तथां प्रथारी संपादक-ओमहरि शर्मा प्रबंध संपादक-ओम जी विधि सलाहकार-हर्षवर्धन द्विवेदी राजेश विश्वकर्म sodrepoter2885/irgnaph.com

जिला संवादध्य क्रवय समस्य विवादों कर न्यावक्षेत्र कानपुर नगर न्यायालय होगा।



संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, अनौगी के मुदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं। क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड्, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। केंद्र के मुदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मुदा के तापमान में वृद्धि हो

जाती है। जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पडता है।मुदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। जिसके कारण मुदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते। जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ–साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेत् समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है। वाय प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को

सलाह दी है कि मई माह



में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों मैं प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाण की संख्या में भी वृद्धि होगी। तथा मुदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा।जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है।फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी

कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मुदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्का शक्ति को बढ़ते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं। जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। उन्होंने बताया कि इक्षेनमिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहूं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है। मुदा वैज्ञानिक खें खलील खान ने किसान भाइयों से अपील

हिन्दी दैनिक

R.N.I.No-UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

• कानपुर गुरुवार 13 मई 2021

1

- पृथः

- TITE: 1.00 W

फसल अवशेष न जलाए,कंपोस्ट खाद बनाए किसानः डॉ खलील खान

क्वौज/कानपुर- कृषि विज्ञान केंद्र, अनीगी (कज्ञीज) के मृदा वैज्ञानिकडॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्केटर से क्टाई उपरांत फारल अवशेषों को रवेत में न जलाएं क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड, तना,पत्तियां आदि केपोषक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं वेद्रं के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील रवान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है जिसके करण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं जिसके



एसएस

से खाय सामग्री आपूर्ति, दवा वितरण, बेड की उपलब्धता, ऑक्सीजन की उपलब्धता, प्लाज्मा एवं रक्तदान के साथ साइको-सोशल काउंसलिंग हेतु मदद के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना के पूर्व एवं वर्तमान स्वयंसेवकों के माध्यम से सशक्त नेटवर्क तैयार किया है जो इस महामारी में 24×7 तत्पर होंगे यह जानकारी कालेज की प्रोफेसर डाक्टर सुनीता आर्या ने दी

मास्क भी

हराएंगे

कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते जिससे पीधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं परिणाम खरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है इसके अतिरिक्त वातावरण के साध-साध पश्चओं के चारे के लिए भी व्यवस्था काने हेतु समस्या आती है उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है वाय प्रद्धण से अस्थमा और एलर्जी जैसी वर्ड प्रकर की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्बटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपीरट या वर्मी क्योस्ट रवाद बनाकर खेतों मैं प्रयोग करें इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की सरंच्या में भी वृद्धि होगी तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संखना में सुधार होगा जिससे भूमि जल धारण दामता एवं वायु संवार में वृद्धि होती है फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्य उत्सर्जन भी कम होता है जिससे सिंवाई जल की उपयोगिता बढ़ती है इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएव मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएव मान सामान्य किया जा सकता है उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों

का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ

प्राप्त कर किसान लाभान्तित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हए वातावरण को खन्छ बनाएं जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें उन्होंने बताया कि इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहूं एवं धान केपसल अवशेषों को जलाने में क्मी आई है मृद्य वैज्ञानिक डॉरवलील खान ने विसान भाइयों से अपील की है कि वह मेहंएवं अन्य स्त्री वी पसलों की हार्वेटर से क्टाई केउपरांत फ्सल अक्षेप प्रबंधन क्षेत्र आधुनिक प्रमुख वृधि यहं जैसे तकेवर हैरों से जुताई वरकेपसल अवजेर्धों को रवेत मेंदबा दें जिससे मुद्रा में जीवक्ष कर्मन की बद्धेतरी होगी और फसल अवशेष रवाद का वार्य क्रेगी इसके अतिक्षित मेह्यू चं अन्य सी फसल केफ्सल अक्ट्रोचों को रवेत में फ्ला कर डी कंपीजर का प्रयोग करते हुए ८ से १० दिन मेंफसल अवशेष सड जाएगी व रवेत में उत्तम स्वाद का काम केगी जिससे मृदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवता युक्त प्राप्त होती है





संजय स्टूडियो